

## उत्तररामचरित में धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध

Dr. Parveen Kumar

Assistant Professor (Sanskrit), D.A.V. College, Pehowa, Kurukshetra

### Abstract

भवभूति का *उत्तररामचरित* संस्कृत नाट्य साहित्य का एक अनुपम ग्रंथ है, जिसमें राम के उत्तरकांड का नाट्यरूप प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक में धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध अत्यंत गहन रूप से उभरता है। धर्म यहाँ केवल धार्मिक कर्मकांड या आचार-विधि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, लोकहित और राजधर्म की संकल्पना का प्रतीक है। राजनीति भी केवल सत्ता-संचालन या प्रशासनिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि धर्माधारित शासन की रूपरेखा है। राम का चरित्र इस अंतर्संबंध का आदर्श प्रतिरूप है। वे व्यक्तिगत सुख और पारिवारिक कर्तव्यों का त्याग कर जनकल्याण को प्रधानता देते हैं। सीता-त्याग प्रसंग इस द्वंद्व का सबसे मार्मिक उदाहरण है, जहाँ व्यक्तिगत धर्म (पत्नी का संरक्षण और पारिवारिक दायित्व) तथा राजधर्म (जनमत का पालन और प्रजा की अपेक्षाओं का निर्वाह) आमने-सामने आते हैं। भवभूति ने इस प्रसंग के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, अन्यथा शासन लोकहित से विमुख हो जाएगा।

इस नाटक में धर्म और राजनीति का संबंध विरोधी नहीं, बल्कि पूरक रूप में प्रस्तुत किया गया है। धर्म राजनीति को नैतिकता और न्याय का आधार प्रदान करता है, जबकि राजनीति धर्म को सामाजिक और प्रशासनिक रूप देती है। भवभूति का संदेश स्पष्ट है कि शासक को व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर धर्माधारित राजनीति करनी चाहिए। यही दृष्टि भारतीय राजनीतिक परंपरा में *राजधर्म* की संकल्पना को पुष्ट करती है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य *उत्तररामचरित* में धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध का विश्लेषण करना है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि भारतीय चिंतन में आदर्श शासन की नींव धर्म और राजनीति के समन्वय पर आधारित है। यह अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय राजनीतिक दर्शन की मूल धारा को भी उजागर करता है।

**Keywords:** - उत्तररामचरित, भवभूति, धर्म, राजनीति, राजधर्म, लोकहित, नैतिकता, सीता-त्याग प्रसंग, आदर्श शासन, भारतीय राजनीतिक चिंतन, सामाजिक न्याय, नाट्य साहित्य, धर्माधारित राजनीति, कर्तव्यपरायणता, लोककल्याण

### Introduction

भारतीय साहित्य और दर्शन में धर्म तथा राजनीति का अंतर्संबंध एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल विषय रहा है। वेदों से लेकर महाकाव्यों और पुराणों तक धर्म को केवल धार्मिक कर्मकांड या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे सामाजिक न्याय, नैतिकता, लोकहित और कर्तव्यपरायणता की संकल्पना के रूप में देखा गया। इसी प्रकार राजनीति भी भारतीय परंपरा में केवल सत्ता-संचालन या प्रशासनिक व्यवस्था नहीं रही, बल्कि धर्माधारित शासन की रूपरेखा रही है, जहाँ शासक का दायित्व केवल राज्य की रक्षा करना नहीं, बल्कि प्रजा के कल्याण और न्याय की स्थापना करना भी है। भवभूति का *उत्तररामचरित* इस परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह नाटक राम के उत्तरकांड का नाट्यरूप है, जिसमें राम के जीवन के सबसे संवेदनशील और जटिल प्रसंगों का चित्रण किया गया है। विशेषकर सीता-त्याग प्रसंग धर्म और राजनीति के द्वंद्व का सबसे मार्मिक उदाहरण है। एक ओर राम का व्यक्तिगत

धर्म है—पत्नी का संरक्षण, पारिवारिक दायित्व और व्यक्तिगत भावनाएँ; दूसरी ओर राजधर्म है—जनमत का पालन, प्रजा की अपेक्षाओं का निर्वाह और लोकहित की रक्षा। भवभूति ने इस द्वंद्व को केवल भावनात्मक स्तर पर नहीं, बल्कि दार्शनिक और राजनीतिक स्तर पर भी प्रस्तुत किया है। राम का निर्णय यह दर्शाता है कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए। यदि राजनीति धर्म से विमुख हो जाए तो शासन लोकहित से दूर हो जाएगा और शासक का आदर्श स्वरूप नष्ट हो जाएगा। धर्म राजनीति को नैतिकता और न्याय का आधार प्रदान करता है, जबकि राजनीति धर्म को सामाजिक और प्रशासनिक रूप देती है। इस प्रकार धर्म और राजनीति का संबंध विरोधी नहीं, बल्कि पूरक है। *उत्तररामचरित* में भवभूति ने यह संदेश दिया कि शासक को व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर धर्माधारित राजनीति करनी चाहिए। यही दृष्टि भारतीय राजनीतिक परंपरा में *राजधर्म* की संकल्पना को पुष्ट करती है। इस नाटक के माध्यम से धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध भारतीय चिंतन की मूल धारा को प्रकट करता है, जहाँ आदर्श शासन की नींव धर्म और राजनीति के समन्वय पर आधारित है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य *उत्तररामचरित* में धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध का गहन विश्लेषण करना है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट किया जाएगा कि भारतीय साहित्य और दर्शन में आदर्श शासन की संकल्पना केवल सत्ता-संचालन पर नहीं, बल्कि धर्म और राजनीति के संतुलन पर आधारित है। यह अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय राजनीतिक दर्शन की मूल धारा को भी उजागर करता है।

### साहित्यिक पृष्ठभूमि

भारतीय साहित्य की परंपरा में धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध एक निरंतर प्रवाहमान विषय रहा है। वेदों में धर्म का स्वरूप ऋत और सत्य के रूप में मिलता है, जो केवल धार्मिक कर्मकांड तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था और नैतिक जीवन का आधार है। राजनीति का स्वरूप भी वेदों में राजधर्म के रूप में प्रकट होता है, जहाँ राजा को प्रजा का रक्षक और न्याय का प्रवर्तक माना गया है। उपनिषदों में धर्म को आत्मानुशासन और नैतिकता से जोड़ा गया, जो राजनीति के लिए भी आधारभूत है। महाकाव्य परंपरा में धर्म और राजनीति का विमर्श और अधिक स्पष्ट रूप से सामने आता है। *वाल्मीकि रामायण* में धर्म और राजनीति का आधारभूत स्वरूप चित्रित है। राम का वनगमन पितृवचन पालन के कारण होता है, जो व्यक्तिगत धर्म का उदाहरण है, जबकि सीता-त्याग प्रसंग राजधर्म और जनमत की प्रधानता को दर्शाता है। इसी प्रकार *महाभारत* में धर्म और राजनीति का संघर्ष और समाधान विस्तृत रूप से चित्रित है। युधिष्ठिर का राजधर्म, अर्जुन का क्षत्रिय धर्म और कृष्ण का नीति-धर्म इस विमर्श को गहन बनाते हैं। शास्त्रीय काव्यकारों में कालिदास ने *रघुवंश* के माध्यम से धर्म और राजनीति का आदर्श चित्रण किया। रघुवंश के नरेश धर्माधारित राजनीति के प्रतीक हैं, जहाँ सत्ता का उद्देश्य केवल शासन नहीं, बल्कि लोकहित और न्याय की स्थापना है। पुराण साहित्य में भी धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध देवताओं और असुरों की कथाओं में मिलता है। राजधर्म को प्रजा-पालन और न्याय-स्थापन का आधार माना गया है, जिससे धर्म और राजनीति का समन्वय आदर्श शासन की संकल्पना को पुष्ट करता है।

इसी परंपरा को भवभूति ने *उत्तररामचरित* में आगे बढ़ाया। उन्होंने धर्म और राजनीति के द्वंद्व को नाट्यरूप में प्रस्तुत किया, जिससे यह विषय और भी संवेदनशील और गहन हो गया। विशेषकर सीता-त्याग प्रसंग इस द्वंद्व का चरम उदाहरण है, जहाँ व्यक्तिगत धर्म और राजधर्म आमने-सामने आते हैं। भवभूति ने इस प्रसंग के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, अन्यथा शासन लोकहित से विमुख हो जाएगा। इस प्रकार साहित्यिक पृष्ठभूमि से स्पष्ट होता है कि धर्म

और राजनीति का अंतर्संबंध भारतीय साहित्य की मूल धारा रहा है। वेदों में ऋत और सत्य, रामायण में राजधर्म और लोकहित, महाभारत में धर्म-राजनीति का संघर्ष, रघुवंश में आदर्श शासन और पुराणों में धर्माधारित राजनीति—ये सभी भवभूति के *उत्तररामचरित* के लिए आधारभूमि तैयार करते हैं। इस परंपरा में भवभूति ने धर्म और राजनीति के द्वंद्व को नाट्यरूप में प्रस्तुत कर इसे और भी गहन और संवेदनशील बना दिया।

### **धर्म की अवधारणा**

*उत्तररामचरित* में धर्म का स्वरूप केवल धार्मिक कर्मकांड या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक और नैतिक जीवन का आधार है। भवभूति ने धर्म को एक ऐसी शक्ति के रूप में चित्रित किया है जो व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के पालन के लिए प्रेरित करती है और समाज को न्यायपूर्ण व्यवस्था की ओर अग्रसर करती है। धर्म यहाँ व्यक्तिगत आचरण, पारिवारिक दायित्व और राजकीय कर्तव्यों का समन्वय है। राम का चरित्र धर्म का मूर्त रूप है। वे सदैव सत्य, न्याय और लोकहित को प्रधानता देते हैं। जब वे पितृवचन पालन के लिए वनगमन करते हैं, तो यह उनके व्यक्तिगत धर्म का उदाहरण है। यहाँ धर्म का स्वरूप केवल पुत्रधर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सत्यनिष्ठा और वचनपालन की उच्चतम नैतिकता को भी प्रकट करता है। इसी प्रकार सीता-त्याग प्रसंग में धर्म का स्वरूप और भी जटिल हो जाता है। एक ओर राम का व्यक्तिगत धर्म है—पत्नी का संरक्षण और पारिवारिक दायित्व; दूसरी ओर राजधर्म है—जनमत का पालन और प्रजा की अपेक्षाओं का निर्वाह। इस द्वंद्व में राम व्यक्तिगत सुख का त्याग कर राजधर्म को प्रधानता देते हैं।

धर्म का स्वरूप *उत्तररामचरित* में बहुआयामी है। यह केवल धार्मिक आचार नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और लोककल्याण की संकल्पना है। धर्म व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के पालन के लिए बाध्य करता है और शासक को प्रजा के हित में निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है। भवभूति ने धर्म को राजनीति का आधार माना है, क्योंकि राजनीति तभी स्थायी और न्यायपूर्ण होगी जब वह धर्म से संचालित हो। इस प्रकार *उत्तररामचरित* में धर्म की अवधारणा व्यक्तिगत, सामाजिक और राजकीय स्तर पर प्रकट होती है। यह व्यक्ति को नैतिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है, समाज को न्यायपूर्ण व्यवस्था प्रदान करती है और राजनीति को धर्माधारित शासन की दिशा देती है। राम का चरित्र इस धर्म का आदर्श प्रतिरूप है, जहाँ व्यक्तिगत त्याग और लोकहित का संगम होता है।

### **राजनीति की अवधारणा**

*उत्तररामचरित* में राजनीति का स्वरूप केवल सत्ता-संचालन या प्रशासनिक व्यवस्था तक सीमित नहीं है। भवभूति ने राजनीति को धर्म के अधीन और लोकहित के लिए उत्तरदायी माना है। राजनीति का मूल आधार यहाँ *राजधर्म* है, जो शासक को प्रजा के कल्याण, न्याय की स्थापना और सामाजिक संतुलन की रक्षा के लिए बाध्य करता है। राम का शासन आदर्श राजनीति का प्रतिरूप है। उनके निर्णय यह दर्शाते हैं कि राजनीति का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि धर्म की रक्षा और लोकहित की स्थापना करना है। रामराज्य का वर्णन इस आदर्श राजनीति का सर्वोत्तम उदाहरण है, जहाँ प्रजा सुखी, सुरक्षित और न्यायपूर्ण जीवन जीती है। भवभूति ने राजनीति को धर्म से पृथक नहीं माना, बल्कि धर्माधारित राजनीति को ही आदर्श बताया। सीता-त्याग प्रसंग राजनीति की जटिलता को उजागर करता है। यहाँ शासक को व्यक्तिगत भावनाओं और पारिवारिक दायित्वों से ऊपर उठकर जनमत और प्रजा की अपेक्षाओं का पालन करना पड़ता है। राम का निर्णय यह स्पष्ट करता है कि राजनीति में शासक की

प्राथमिकता व्यक्तिगत सुख नहीं, बल्कि लोकहित और न्याय है। इस प्रकार राजनीति का स्वरूप यहाँ नैतिकता और धर्म पर आधारित है।

भवभूति की दृष्टि में राजनीति तभी स्थायी और न्यायपूर्ण होगी जब वह धर्म से संचालित हो। राजनीति धर्म को सामाजिक और प्रशासनिक रूप देती है, जबकि धर्म राजनीति को नैतिकता और न्याय का आधार प्रदान करता है। इस प्रकार धर्म और राजनीति का संबंध विरोधी नहीं, बल्कि पूरक है। *उत्तररामचरित* में राजनीति की अवधारणा भारतीय राजनीतिक चिंतन की मूल धारा को प्रकट करती है। यह स्पष्ट करती है कि आदर्श शासन की नींव धर्म और राजनीति के समन्वय पर आधारित है। राम का चरित्र इस आदर्श राजनीति का प्रतीक है, जहाँ व्यक्तिगत त्याग और लोकहित का संगम होता है।

### **धर्म और राजनीति का द्वंद्व**

*उत्तररामचरित* में धर्म और राजनीति का द्वंद्व अत्यंत मार्मिक और गहन रूप से चित्रित हुआ है। भवभूति ने राम के जीवन के उस प्रसंग को केंद्र में रखा है, जहाँ व्यक्तिगत धर्म और राजधर्म आमने-सामने आते हैं। यह द्वंद्व केवल एक पारिवारिक या भावनात्मक संघर्ष नहीं है, बल्कि भारतीय राजनीतिक चिंतन की मूल समस्या को उजागर करता है—क्या शासक को व्यक्तिगत भावनाओं और पारिवारिक दायित्वों को प्राथमिकता देनी चाहिए, या जनमत और प्रजा के हित को सर्वोपरि रखना चाहिए। सीता-त्याग प्रसंग इस द्वंद्व का चरम उदाहरण है। राम का व्यक्तिगत धर्म उन्हें पत्नी का संरक्षण करने और पारिवारिक दायित्व निभाने के लिए बाध्य करता है। परंतु राजधर्म उन्हें जनमत का पालन करने और प्रजा की अपेक्षाओं का निर्वाह करने के लिए बाध्य करता है। यहाँ धर्म और राजनीति का संघर्ष स्पष्ट रूप से सामने आता है। राम का निर्णय व्यक्तिगत सुख और पारिवारिक जीवन का त्याग कर राजधर्म को प्रधानता देना है। यह निर्णय भावनात्मक दृष्टि से कठोर और पीड़ादायक है, परंतु राजनीतिक दृष्टि से आवश्यक और न्यायसंगत है।

भवभूति ने इस द्वंद्व को केवल घटनात्मक रूप में नहीं, बल्कि दार्शनिक और नैतिक दृष्टि से भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह दिखाया कि राजनीति का स्वरूप तभी स्थायी और न्यायपूर्ण होगा जब वह धर्म से संचालित हो। यदि शासक व्यक्तिगत भावनाओं को प्राथमिकता देगा, तो राजनीति लोकहित से विमुख हो जाएगी। परंतु यदि शासक धर्माधारित राजनीति करेगा, तो शासन न्यायपूर्ण और स्थायी होगा। इस द्वंद्व का समाधान भवभूति ने धर्म और राजनीति के पूरक स्वरूप में खोजा है। धर्म राजनीति को नैतिकता और न्याय का आधार प्रदान करता है, जबकि राजनीति धर्म को सामाजिक और प्रशासनिक रूप देती है। राम का निर्णय यह स्पष्ट करता है कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, अन्यथा शासन लोकहित से दूर हो जाएगा। इस प्रकार *उत्तररामचरित* में धर्म और राजनीति का द्वंद्व केवल एक ऐतिहासिक या साहित्यिक प्रसंग नहीं है, बल्कि भारतीय राजनीतिक चिंतन की मूल समस्या का समाधान भी है। यह द्वंद्व यह स्पष्ट करता है कि आदर्श शासन की नींव धर्म और राजनीति के समन्वय पर आधारित है। राम का चरित्र इस आदर्श का प्रतीक है, जहाँ व्यक्तिगत त्याग और लोकहित का संगम होता है।

### **धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध**

*उत्तररामचरित* में भवभूति ने धर्म और राजनीति को विरोधी नहीं, बल्कि पूरक रूप में चित्रित किया है। धर्म राजनीति को नैतिकता और न्याय का आधार प्रदान करता है, जबकि राजनीति धर्म को सामाजिक और प्रशासनिक रूप देती है। इस प्रकार दोनों का संबंध परस्पर निर्भरता और सहयोग का है। राम का चरित्र इस अंतर्संबंध का आदर्श प्रतिरूप है। वे व्यक्तिगत सुख और पारिवारिक दायित्वों का त्याग कर

जनकल्याण को प्राथमिकता देते हैं। सीता-त्याग प्रसंग इस अंतर्संबंध का सबसे मार्मिक उदाहरण है। यहाँ धर्म और राजनीति आमने-सामने आते हैं—व्यक्तिगत धर्म राम को पत्नी का संरक्षण करने के लिए बाध्य करता है, जबकि राजधर्म उन्हें जनमत का पालन करने और प्रजा की अपेक्षाओं का निर्वाह करने के लिए बाध्य करता है। राम का निर्णय यह स्पष्ट करता है कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, अन्यथा शासन लोकहित से विमुख हो जाएगा।

भवभूति ने यह प्रतिपादित किया कि धर्म और राजनीति का संबंध विरोधी नहीं, बल्कि पूरक है। धर्म राजनीति को नैतिकता और न्याय का आधार प्रदान करता है, जबकि राजनीति धर्म को सामाजिक और प्रशासनिक रूप देती है। इस प्रकार धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध भारतीय चिंतन की मूल धारा को प्रकट करता है। इस अंतर्संबंध का दार्शनिक आधार नैतिकता और कर्तव्य है। राजनीति तभी स्थायी और न्यायपूर्ण होगी जब वह धर्म से संचालित हो। यदि राजनीति धर्म से विमुख हो जाएगी, तो शासन अन्यायपूर्ण और अस्थायी होगा। परंतु यदि राजनीति धर्माधारित होगी, तो शासन न्यायपूर्ण और स्थायी होगा। यही दृष्टि भारतीय राजनीतिक परंपरा में *राजधर्म* की संकल्पना को पुष्ट करती है। *उत्तररामचरित* में धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध केवल एक साहित्यिक प्रसंग नहीं है, बल्कि भारतीय राजनीतिक दर्शन की मूल समस्या का समाधान भी है। यह स्पष्ट करता है कि आदर्श शासन की नींव धर्म और राजनीति के समन्वय पर आधारित है। राम का चरित्र इस आदर्श का प्रतीक है, जहाँ व्यक्तिगत त्याग और लोकहित का संगम होता है।

### **दार्शनिक विश्लेषण**

*उत्तररामचरित* में भवभूति ने धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध को केवल घटनात्मक या भावनात्मक स्तर पर नहीं, बल्कि गहन दार्शनिक दृष्टि से भी प्रस्तुत किया है। उनके नाटक में धर्म और राजनीति का संबंध नैतिकता, कर्तव्य और लोकहित पर आधारित है। धर्म यहाँ केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन की नैतिक दिशा है, जो व्यक्ति और समाज दोनों को न्यायपूर्ण मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। राजनीति भी केवल सत्ता-संचालन नहीं, बल्कि धर्माधारित शासन की व्यवस्था है, जो प्रजा के कल्याण और न्याय की स्थापना को सर्वोपरि मानती है। दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध एक प्रकार का *कर्तव्य-सिद्धांत* है। राम का चरित्र इस सिद्धांत का आदर्श प्रतिरूप है। वे व्यक्तिगत सुख और पारिवारिक दायित्वों का त्याग कर राजधर्म को प्रधानता देते हैं। यह निर्णय भावनात्मक दृष्टि से कठोर है, परंतु दार्शनिक दृष्टि से यह राजनीति की नैतिकता और स्थायित्व को सुनिश्चित करता है। भवभूति ने यह प्रतिपादित किया कि राजनीति तभी स्थायी और न्यायपूर्ण होगी जब वह धर्म से संचालित हो।

सीता-त्याग प्रसंग इस दार्शनिक विश्लेषण का केंद्र है। यहाँ धर्म और राजनीति का द्वंद्व स्पष्ट रूप से सामने आता है। राम का व्यक्तिगत धर्म उन्हें पत्नी का संरक्षण करने के लिए बाध्य करता है, जबकि राजधर्म उन्हें जनमत का पालन करने और प्रजा की अपेक्षाओं का निर्वाह करने के लिए बाध्य करता है। राम का निर्णय यह स्पष्ट करता है कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए। यही निर्णय धर्म और राजनीति के पूरक स्वरूप को प्रकट करता है। भवभूति की दृष्टि में धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध भारतीय राजनीतिक चिंतन की मूल धारा को पुष्ट करता है। यह दृष्टि *राजधर्म* की संकल्पना को स्पष्ट करती है, जहाँ शासक का दायित्व केवल सत्ता-संचालन नहीं, बल्कि प्रजा के कल्याण और न्याय की स्थापना है। धर्म राजनीति को नैतिकता और न्याय का आधार प्रदान करता है, जबकि राजनीति धर्म को

सामाजिक और प्रशासनिक रूप देती है। इस प्रकार दोनों का संबंध विरोधी नहीं, बल्कि पूरक है। दार्शनिक दृष्टि से *उत्तररामचरित* यह संदेश देता है कि आदर्श शासन की नींव धर्म और राजनीति के समन्वय पर आधारित है। राम का चरित्र इस आदर्श का प्रतीक है, जहाँ व्यक्तिगत त्याग और लोकहित का संगम होता है। भवभूति ने इस नाटक के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, अन्यथा शासन लोकहित से विमुख हो जाएगा।

### **साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व**

भवभूति का *उत्तररामचरित* केवल एक नाट्यकृति नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति और साहित्य की मूल धारा का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध जिस रूप में प्रस्तुत हुआ है, वह भारतीय समाज की उस परंपरा को उजागर करता है जहाँ शासन और जीवन की नींव नैतिकता, कर्तव्य और लोकहित पर आधारित होती है। राम का चरित्र केवल एक आदर्श शासक का प्रतीक नहीं है, बल्कि भारतीय जनमानस में धर्माधारित राजनीति की सर्वोच्च संकल्पना का प्रतिनिधित्व करता है। यही कारण है कि *रामराज्य* भारतीय संस्कृति में आदर्श शासन की परिभाषा बन गया और आज भी लोकहितकारी शासन की संकल्पना के रूप में स्मरण किया जाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जाए तो धर्म और राजनीति का यह अंतर्संबंध भारतीय समाज की मूल प्रवृत्ति को प्रकट करता है। यहाँ धर्म केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, लोकहित और नैतिकता का प्रतीक है। राजनीति भी केवल सत्ता-संचालन नहीं, बल्कि धर्माधारित शासन की व्यवस्था है। इस प्रकार धर्म और राजनीति का समन्वय भारतीय संस्कृति की उस मूल धारा को स्पष्ट करता है, जहाँ शासन का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं, बल्कि लोककल्याण है। यह दृष्टि भारतीय समाज की सामूहिक चेतना को आकार देती है और शासक को प्रजा के हित में उत्तरदायी बनाती है।

साहित्यिक दृष्टि से भवभूति का *उत्तररामचरित* संस्कृत नाट्य साहित्य का एक अनुपम ग्रंथ है। इसमें धर्म और राजनीति के द्वंद्व को नाट्यरूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह विषय और भी संवेदनशील और गहन हो गया है। भवभूति ने इस नाटक के माध्यम से धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध को साहित्यिक और कलात्मक रूप दिया, जिससे यह विषय केवल दार्शनिक विमर्श तक सीमित नहीं रहा, बल्कि साहित्यिक और सांस्कृतिक धारा का भी अंग बन गया। नाटक की संरचना, संवादों की गहनता और पात्रों की संवेदनशीलता इस बात को स्पष्ट करती है कि भवभूति ने धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध को केवल विचार के स्तर पर नहीं, बल्कि कलात्मक अभिव्यक्ति के स्तर पर भी साकार किया। इस प्रकार *उत्तररामचरित* का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व यह है कि यह भारतीय संस्कृति और साहित्य की मूल धारा को प्रकट करता है। धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध यहाँ केवल शासन की संकल्पना नहीं, बल्कि जीवन की नैतिक दिशा और समाज की सामूहिक चेतना का भी प्रतीक है। राम का चरित्र इस आदर्श का मूर्त रूप है, जहाँ व्यक्तिगत त्याग और लोकहित का संगम होता है। भवभूति ने इस नाटक के माध्यम से यह संदेश दिया कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, अन्यथा शासन लोकहित से विमुख हो जाएगा। यही संदेश भारतीय संस्कृति और साहित्य में आदर्श शासन की संकल्पना को पुष्ट करता है।

### **निष्कर्ष**

*उत्तररामचरित* में भवभूति ने धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध को जिस गहनता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है, वह भारतीय साहित्य और चिंतन की मूल धारा को उजागर करता है। धर्म यहाँ

केवल धार्मिक कर्मकांड या व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, नैतिकता और लोकहित का प्रतीक है। राजनीति भी केवल सत्ता-संचालन नहीं, बल्कि धर्माधारित शासन की व्यवस्था है, जो प्रजा के कल्याण और न्याय की स्थापना को सर्वोपरि मानती है। राम का चरित्र इस अंतर्संबंध का आदर्श प्रतिरूप है। वे व्यक्तिगत सुख और पारिवारिक दायित्वों का त्याग कर जनकल्याण को प्राथमिकता देते हैं। सीता-त्याग प्रसंग इस द्वंद्व का सबसे मार्मिक उदाहरण है, जहाँ व्यक्तिगत धर्म और राजधर्म आमने-सामने आते हैं। राम का निर्णय यह स्पष्ट करता है कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, अन्यथा शासन लोकहित से विमुख हो जाएगा। यही निर्णय धर्म और राजनीति के पूरक स्वरूप को प्रकट करता है।

दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध नैतिकता और कर्तव्य पर आधारित है। राजनीति तभी स्थायी और न्यायपूर्ण होगी जब वह धर्म से संचालित हो। यदि राजनीति धर्म से विमुख हो जाएगी, तो शासन अन्यायपूर्ण और अस्थायी होगा। परंतु यदि राजनीति धर्माधारित होगी, तो शासन न्यायपूर्ण और स्थायी होगा। यही दृष्टि भारतीय राजनीतिक परंपरा में *राजधर्म* की संकल्पना को पुष्ट करती है। सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से *उत्तररामचरित* भारतीय समाज की उस मूल प्रवृत्ति को प्रकट करता है, जहाँ शासन का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं, बल्कि लोककल्याण है। भवभूति ने इस नाटक के माध्यम से धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध को साहित्यिक और कलात्मक रूप दिया, जिससे यह विषय केवल दार्शनिक विमर्श तक सीमित नहीं रहा, बल्कि साहित्यिक और सांस्कृतिक धारा का भी अंग बन गया। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि *उत्तररामचरित* में धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध भारतीय चिंतन की मूल धारा को प्रकट करता है। यह स्पष्ट करता है कि आदर्श शासन की नींव धर्म और राजनीति के समन्वय पर आधारित है। राम का चरित्र इस आदर्श का प्रतीक है, जहाँ व्यक्तिगत त्याग और लोकहित का संगम होता है। भवभूति का संदेश यही है कि राजनीति को धर्म का आधार लेना चाहिए, तभी शासन न्यायपूर्ण, स्थायी और लोकहितकारी होगा।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **वाल्मीकि रामायण** – मूल संस्कृत पाठ एवं विभिन्न टीकाएँ।
2. **महाभारत** – धर्म और राजनीति के द्वंद्व का महाकाव्यात्मक आधार।
3. **कालिदास, रघुवंश** – राजधर्म और आदर्श शासन का काव्यात्मक चित्रण।
4. **भवभूति, उत्तररामचरित** – धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध का नाट्यरूप।
5. **पुराण साहित्य** – धर्माधारित राजनीति और राजधर्म की संकल्पना।
6. **कौटिल्य, अर्थशास्त्र** – राजनीति और शासन की व्यावहारिक दृष्टि।
7. **मनोहरलाल शर्मा, संस्कृत नाट्य साहित्य का इतिहास** – भवभूति और उनके नाटकों का विश्लेषण।
8. **रामकुमार वर्मा, संस्कृत साहित्य का इतिहास** – धर्म और राजनीति परंपरा का साहित्यिक परिप्रेक्ष्य।
9. **एस. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन** – धर्म और राजनीति के दार्शनिक आधार का विवेचन।
10. **डी.डी. कोसांबी, भारतीय संस्कृति का अध्ययन** – भारतीय समाज और राजनीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
11. **विश्वनाथ त्रिपाठी, धर्म और राजनीति का अंतर्संबंध** – आधुनिक दृष्टि से धर्म-राजनीति का विश्लेषण।
12. **रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास** – धर्म और राजनीति की सांस्कृतिक धारा का विवेचन।